अब सौंप दिया .....

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।

अब सौंप दिया.....

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ दुनियां भर का, सब प्यार/भार तुम्हारे हाथों में ।।

अब सौंप दिया.....

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण–दोष समर्पित हों, करतार/भगवान् तुम्हारे हाथों में ।।

अब सौंप दिया.....

यदि मानव का मुझे जन्म मिले, तो–तव चरणों का पुजारी बनूँ ।
इस पूजक की एक–एक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ।।

अब सौंप दिया.....

जब–जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, निराकार/साकार तुम्हारे हाथों में ।।

अब सौंप दिया.....

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ।।

अब सौंप दिया.....